

UGC NET 23rd June 2026 Shift 2 Philosophy Memory Based Paper-exam

Q1. अनुभववाद की विल्लर्ड वैन ओर्मन द्विन की आलोचनाओं के संबंध में निम्नलिखित दो कथनों पर विचार करें:

- कथन I: अनुभववाद के दो हठधर्म में, द्विन विश्लेषणात्मक-सिंथेटिक भेद को यह दिखाकर खारिज करता है कि विश्लेषणात्मकता की अवधारणा "पर्याय" और "अर्थ संबंधी नियम" जैसे शब्दों के एक परिपत्र नेटवर्क पर निर्भर करती है जिन्हें विश्लेषणात्मकता को स्वयं माने बिना परिभाषित नहीं किया जा सकता है।
- कथन II: द्विन का कट्टर समग्रतावाद मानव ज्ञान को "विश्वास के वेब" के रूप में मॉडल करता है जहाँ व्यक्तिगत वाक्य एक-एक करके अनुभव के न्यायाधिकरण का सामना करते हैं, जिससे प्रणाली के तार्किक केंद्र को प्रभावित किए बिना परिधीय कथनों को संशोधित किया जा सकता है।

इन कथनों का मूल्यांकन करें और सही विकल्प चुनें:

- (a) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
- (b) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
- (c) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
- (d) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।

Ans.(a)

Q2. प्रतीत्यसमुत्पाद के निम्नलिखित तत्वों को सही कारण-प्रभाव क्रम में व्यवस्थित करें:

- A. नाम-रूप
- B. वेदना
- C. षडायतन
- D. तृष्णा
- E. स्पर्श

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

- (a) A-E-D-B-C
- (b) A-C-E-B-D
- (c) A-B-C-D-E
- (d) A-C-B-E-D

Ans.(b)

Q3. सूची - I को सूची - II से सुमेलित करें।

सूची - I महावाक्य सूची - II उपनिषद

- (A) तत्-त्वम्-असि (I) छान्दोग्य उपनिषद
- (B) अहम् ब्रह्मास्मि (II) बृहदारण्यक उपनिषद
- (C) प्रज्ञानम् ब्रह्म (III) ऐतरेय उपनिषद
- (D) अयम् आत्मा ब्रह्म (IV) माण्डूक्य उपनिषद



ALL EXAMS, ONE SUBSCRIPTION

Test. Analyze. Improve. Repeat.



Don't just *prepare*. *Perform*.

Test Prime — built only for mock tests.



1,50,000+
Mock Tests



25,000+
Previous Year Papers



800+
Exam Covered



500% Refund
on Selection



5 lakh+
Free Quizzes



Daily
Free PDFs



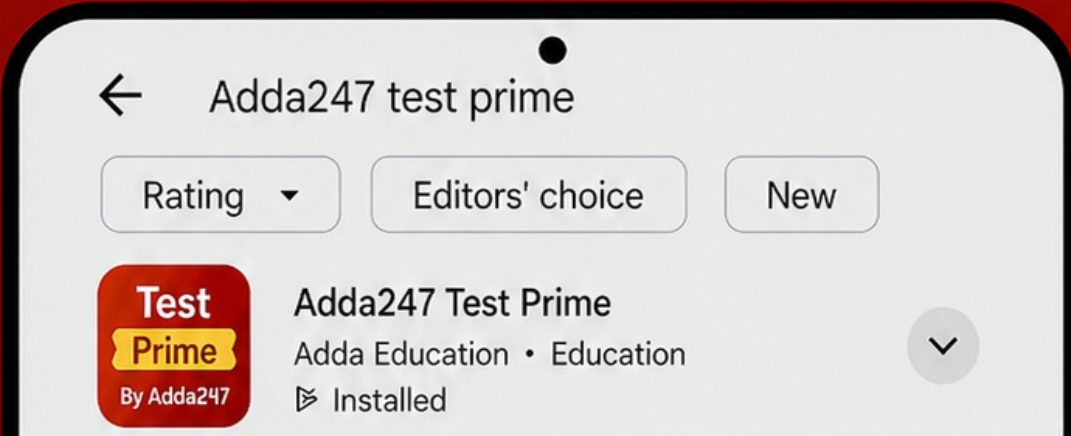
Job Alerts
Stay Updated

- Multilingual
- Detailed Solution
- Strong and Weak Areas



All India Rankings

Compete with lakhs.
Rank. Improve. Repeat.



DOWNLOAD THE APP



नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनें :

- (a) (A)-(I), (B)-(II), (C)-(IV), (D)-(III)
(b) (A)-(I), (B)-(II), (C)-(III), (D)-(IV)
(c) (A)-(II), (B)-(I), (C)-(III), (D)-(IV)
(d) (A)-(II), (B)-(I), (C)-(IV), (D)-(III)

Ans.(b)

Q4. प्लेटो के रिपब्लिक (विशेष रूप से विभाजित रेखा की सादृश्यता) और थियेटेटस के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा कथन वैचारिक रूप से गलत है?

- (a) इकासिया (कल्पना या अनुमान) दृश्य दुनिया (होराटोन) के सबसे निचले खंड पर कब्जा कर लेता है, जो छाया और प्रतिबिंबों से निपटता है, जबकि पिस्टिस (विश्वास) वास्तविक भौतिक वस्तुओं से निपटता है।
(b) डायनोइया (गणितीय या विवेचनात्मक तर्क) नोएसिस (द्वंद्वात्मक/शुद्ध अंतर्दृष्टि) की तुलना में एक उच्च चरण का प्रतिनिधित्व करता है क्योंकि डायनोइया पूरी तरह से अवातानुकूलित है और इसके लिए किसी संवेदी या काल्पनिक शुरुआती बिंदु की आवश्यकता नहीं होती है।
(c) थियेटेटस में, प्लेटो ज्ञान की परिभाषा को "उचित सत्य विश्वास" (सुकरात का स्वप्न) के रूप में व्यवस्थित रूप से जांचता है और अंततः खारिज कर देता है, यह दर्शाते हुए कि सच्चे विश्वास में एक तर्कसंगत परिभाषा (लोगोस) जोड़ने से ज्ञान का एक मूर्खतापूर्ण विवरण प्रदान करने में विफलता मिलती है।
(d) दृश्य दुनिया से बोधगम्य दुनिया (नोएटोन) में संक्रमण डॉक्सा (राय/विश्वास) से एपिस्टेम (वास्तविक वैज्ञानिक ज्ञान) में बदलाव को चिह्नित करता है।

Ans.(b)

Q5. जी.डब्ल्यू.एफ. हेगेल के द्वंद्वात्मक दर्शन के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन वैचारिक रूप से त्रुटिपूर्ण है?

- (a) हेगेल के लिए, "तर्कसंगत वास्तविक है, और वास्तविक तर्कसंगत है," जिसका अर्थ है कि इतिहास और वास्तविकता परम आत्मा (वेल्टजिस्ट) का प्रगतिशील आत्म-प्रकटीकरण हैं।
(b) हेगेलियन द्वंद्ववाद थीसिस-एंटीथीसिस-सिंथेसिस के एक स्थिर, यांत्रिक सूत्र के माध्यम से संचालित होता है जहां तत्वों को कड़ाई से एक दूसरे से अलग रखा जाता है।
(c) औफ़हेबंग (सबलेशन) द्वंद्ववाद का मुख्य तंत्र है, जिसका अर्थ है एक साथ नकारना, संरक्षित करना, और सत्य के उच्च स्तर तक एक वैचारिक चरण को ऊपर उठाना।
(d) हेगेल कला, धर्म और दर्शन को तीन अनुक्रमिक चरणों के रूप में देखते हैं जिनके माध्यम से परम आत्मा अपनी अंतिम, पूर्ण आत्म-चेतना प्राप्त करती है।

Ans.(b)

Q6. स्पिनोज़ा के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन से दावे गलत हैं

- A. ईश्वर के नित्य गुण और अस्थायी गुण अलग-अलग हैं
B. जहाँ शरीर है, वहाँ एक मानसिक घटना है
C. बुद्धि चीजों के सार्वभौमिक सार को समझने में मदद करती है।
D. सहज ज्ञान ही पर्याप्त ज्ञान है।
E. जहाँ तक आत्मा पुष्टि या खंडन करती है कि क्या सत्य है या असत्य, हम इसे बुद्धि कहते हैं

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

- (a) केवल A और B
- (b) केवल B और C
- (c) केवल C और D
- (d) केवल D और E

Ans.(d)

Q7. प्लेटो द्वारा 'थिएटेटस' में इन परस्पर जुड़े सिद्धांतों की व्यापक रूप से आलोचना करके ज्ञान को परिभाषित किया गया है।

- A. ज्ञान ही प्रत्यक्ष है
- B. मनुष्य सभी चीजों का मापदंड है
- C. सब कुछ परिवर्तन की स्थिति में है
- D. हेराक्लिटस का पारमेनिडियन विकल्प

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

- (a) केवल A, B और C
- (b) केवल B, C और D
- (c) केवल A, B और D
- (d) केवल A और D

Ans.(a)

Q8. प्रारंभिक भारतीय चिंतन में लौकिक-नैतिक व्यवस्था (ऋत), तीन ऋणों के सिद्धांत (ऋण) और यज्ञ कर्म (यज्ञ) के बीच संरचनात्मक संबंध के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. ऋण एक अंतर्निहित अस्तित्व संबंधी दायित्व है जो किसी व्यक्ति के लौकिक, लौकिक-सामाजिक और आध्यात्मिक व्यवस्थाओं में प्रवेश से उत्पन्न होता है, जिसे केवल समर्पित यज्ञ और नैतिक दायित्वों के प्रदर्शन के माध्यम से चुकाया जा सकता है।
2. तैत्तिरीय संहिता तीन ऋणों को इस प्रकार व्यवस्थित करती है: देव-ऋण (यज्ञों के माध्यम से देवताओं को चुकाया गया ऋण), ऋषि-ऋण (ब्रह्मचर्य/अध्ययन के माध्यम से ऋषियों को चुकाया गया ऋण), और पितृ-ऋण (प्रजनन के माध्यम से पूर्वजों को चुकाया गया ऋण)।
3. पूर्व-मीमांसा प्रणाली में यज्ञ का प्रदर्शन विशुद्ध रूप से कर एकत्र करने के लिए एक सामाजिक-राजनीतिक तंत्र बना हुआ है, जिसका ऋत के लौकिक रखरखाव या व्यक्तिगत शुद्धि से बिल्कुल कोई संबंध नहीं है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 3
- (c) केवल 1 और 2
- (d) 1, 2, और 3

Ans.(c)

Q9. सूची-I में नैतिक विचारकों को सूची-II में उनके सटीक अधि-नैतिक या आदर्शवादी सिद्धांतों के साथ सुमेलित करें:

| सूची-I (विचारक) | सूची-II (सिद्धांत / ढांचा) |
|-----------------|---|
| P. ए.जे. एयर | 1. नैतिक अहंकारवाद: आदर्शवादी दृष्टिकोण कि एजेंटों को विशेष रूप से अपने स्वार्थ में कार्य करना चाहिए। |
| Q. आर.एम. हेयर | 2. भावुकतावाद (Emotivism): गैर-संज्ञानात्मक दृष्टिकोण कि नैतिक निर्णय केवल भावनात्मक अनुमोदन या अस्वीकृति को व्यक्त करते हैं। |
| R. जी.ई. मूर | 3. प्रेस्क्रिप्टिविज्म: भाषाई दृष्टिकोण कि नैतिक शब्द उन आदेशों के रूप में कार्य करते हैं जो क्रिया का मार्गदर्शन करते हैं और उन्हें सभी समान मामलों में लगातार लागू किया जाना चाहिए। |
| S. आयन रैंड | 4. अंतर्ज्ञानवाद (Intuitionism): संज्ञानात्मक दृष्टिकोण कि 'अच्छा' (Good) की अवधारणा एक सरल, अपृथक्करणीय, गैर-प्राकृतिक गुण है जिसे तर्कसंगत अंतर्ज्ञान के माध्यम से जाना जाता है। |

सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित करने वाला सही कूट चुनें:

- (a) P-2, Q-3, R-4, S-1
 (b) P-3, Q-2, R-1, S-4
 (c) P-2, Q-4, R-3, S-1
 (d) P-1, Q-3, R-4, S-2

Ans.(a)

Q10. सूची-I में सूक्ष्म दार्शनिक अभिव्यक्तियों और अवधारणाओं का सूची-II में उनके निश्चित बौद्धिक समर्थकों के साथ मिलान करें:

| सूची-I | सूची-II |
|---|--------------------------|
| I. निर्विकल्प जागरूकता और ज्ञात से स्वतंत्रता | A. एम. एन. रॉय |
| II. रेडिकल मानवतावाद और नया अभिविन्यास | B. जे. कृष्णमूर्ति |
| III. अभिन्न मानवतावाद और चिति | C. स्वामी दयानंद सरस्वती |
| IV. त्रैतवाद (ईश्वर, स्वयं और प्रकृति तीन अलग-अलग सह-अनंत के रूप में) | D. दीनदयाल उपाध्याय |

सही विकल्प चुनें:

- (a) I-B, II-A, III-D, IV-C
 (b) I-B, II-D, III-A, IV-C
 (c) I-A, II-B, III-C, IV-D
 (d) I-D, II-C, III-A, IV-B

Ans.(a)

Q11. आधुनिक भारतीय दार्शनिक निर्माणों और प्रकाशनों के संबंध में निम्नलिखित मील के पत्थरों को उनके सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें (सबसे शुरुआती से नवीनतम):

1. एम.एन. रॉय द्वारा रूढ़िवादी मार्क्सवाद से ब्रेक के बाद कट्टरपंथी मानवतावाद और वैज्ञानिक भौतिकवाद की प्रस्तुति।
2. शिकागो में धर्म संसद में और उसके बाद के व्याख्यानों में स्वामी विवेकानंद द्वारा व्यावहारिक वेदांत और धार्मिक अनुष्ठानों पर संबोधन की डिलीवरी।
3. पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा एक वैकल्पिक राजनीतिक-दार्शनिक प्रतिमान के रूप में एकात्म मानववाद की औपचारिक अभिव्यक्ति।
4. डॉ. एस. राधाकृष्णन द्वारा 'हिंदू व्यू ऑफ लाइफ' का प्रकाशन, हिंदू बहुलवाद की भावना को परिभाषित करना।

सही कोड चुनें:

- (a) 2 → 4 → 1 → 3
- (b) 4 → 2 → 3 → 1
- (c) 2 → 1 → 4 → 3
- (d) 4 → 3 → 2 → 1

Ans.(a)

Q12. इमैनुएल लेविनास के नैतिक दर्शन में, दूसरे के चेहरे (ले विसाज) के साथ आदिम मुठभेड़ के दौरान क्या होता है?

- (a) अहंकार दूसरे की पहचान को अपने स्वयं के संज्ञानात्मक ढांचे में आत्मसात कर लेता है, जिससे पूर्ण ज्ञान का एक उच्च सट्टा संक्षेपण प्राप्त होता है।
- (b) चेहरा सभी वैचारिक पैकेजिंग के माध्यम से टूट जाता है और एक असममित, अनंत नैतिक आदेश ("तुम हत्या नहीं करोगे") जारी करता है जो मेरी ऑटोलॉजिकल स्वतंत्रता से पहले आता है और उसे अस्थिर करता है।
- (c) अहंकार दूसरे को एक अनुभवजन्य वस्तु के रूप में पहचानता है जिसकी उपयोगिता की गणना सामाजिक सामूहिक की खुशी को अधिकतम करने के लिए की जा सकती है।
- (d) चेहरा एक विशुद्ध मनोवैज्ञानिक दर्पण के रूप में कार्य करता है, जो विषय को बिना किसी नैतिक दायित्व के अपने अवचेतन सौंदर्यवादी इच्छाओं को महसूस करने में मदद करता है।

Ans.(b)

Q13. निम्नलिखित में से कौन सा सर्वोदय की अवधारणा की सबसे उपयुक्त परिभाषा है?

- (a) सभी के लिए सामाजिक न्याय
- (b) सबसे कम विशेषाधिकार प्राप्त लोगों को संबोधित करते हुए, सभी का उत्थान
- (c) बेघरों के लिए भोजन और सुरक्षा
- (d) सार्वभौमिक भाईचारा और मानव जाति की एकता

Ans.(b)

Q14. ट्रांसेंडेंटल एस्थेटिक में, कांट दिक् (स्थान) और काल (समय) को संवेदनशीलता के दो मूलभूत रूपों के रूप में पहचानते हैं। कांट के अनुसार, दिक् और काल हैं:

- (a) लंबे समय तक बाहरी दुनिया को देखकर खोजे गए वस्तु-स्वयं (नौमेना) के उद्देश्यपूर्ण, अनुभवजन्य गुण।
- (b) व्यक्तिगत, स्वतंत्र भौतिक वस्तुओं से सामान्य विशेषताओं को अलग करके प्राप्त सामान्य अवधारणाएँ।
- (c) शुद्ध, अनुभवपूर्व अंतर्ज्ञान जो मानव संज्ञानात्मक क्षमता की संरचना में अंतर्निहित है, आवश्यक व्यक्तिपरक स्थितियों के रूप में काम करते हैं जिसके तहत अकेले कच्चे संवेदी डेटा को हमारे द्वारा व्यवस्थित और अनुभव किया जा सकता है।
- (d) मनोवैज्ञानिक भ्रम जो तब पूरी तरह से गायब हो जाते हैं जब कोई एजेंट बौद्धिक परिपक्वता प्राप्त कर लेता है।

Ans.(c)

Q15. गोटलोब फ्रेग के अर्थ (सिन) और संदर्भ (बेड्यूटंग) के बीच मौलिक भेद के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. एक व्यक्तिवाचक संज्ञा का अर्थ प्रस्तुति का तरीका (आर्ट डेस गेगेबेन्सिन) है जिसमें चिह्न की वस्तुनिष्ठ वैचारिक सामग्री शामिल होती है, जबकि संदर्भ वह वास्तविक वस्तु है जिसे चिह्न निर्दिष्ट करता है।

2. दो अभिव्यक्तियाँ पूरी तरह से अलग अर्थ रखते हुए बिल्कुल समान संदर्भ साझा कर सकती हैं, जो यह बताता है कि $a = b$ जैसे पहचान कथन सूचनात्मक (सूचनात्मक पहचान कथन) क्यों हो सकते हैं, जबकि $a = a$ एक मात्र पुनरुक्ति (टॉटोलॉजी) है।
3. फ्रेग का तर्क है कि एक पूर्ण घोषणात्मक वाक्य का अर्थ उसका सत्य-मूल्य (सत्य या असत्य) है, जबकि उस वाक्य का संदर्भ वह विचार (गेडांके) है जिसे वह व्यक्त करता है।
4. फ्रेग के अनुसार, संदर्भ (बेड्यूटिंग) रहित खाली नाम वाले वाक्य भी अपना वस्तुनिष्ठ, संवादात्मक अर्थ (सिन) पूरी तरह खो देते हैं।
- ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1 और 2
(b) केवल 2, 3 और 4
(c) केवल 1, 3 और 4
(d) केवल 1, 2 और 4

Ans.(a)

Q16. यदि एक वैध तर्क रूप को एक कथन रूप में परिवर्तित किया जाता है, तो:-

- A. ऐसा कथन रूप एक सशर्त कथन होना चाहिए
B. ऐसा कथन रूप हमेशा एक पुनरुक्ति है
C. ऐसे कथन रूप का सत्य मान अनिर्धारित है
D. ऐसे कथन रूप के निर्माण में संयोजन का उपयोग किया जाना चाहिए

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

- (a) केवल A, B, D
(b) केवल A और B
(c) केवल A, C, D
(d) केवल A और C

Ans.(b)

Q17. मानव प्रकृति और प्रकृति की स्थिति के बारे में उनकी अंतर्निहित मान्यताओं के आधार पर सामाजिक अनुबंध के सिद्धांत काफी भिन्न होते हैं। निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प थॉमस हॉब्स के संविदावाद की नैतिक और ज्ञानमीमांसीय नींव को जॉन लोके के संविदावाद के साथ सटीक रूप से विपरीत करता है?

- (a) हॉब्स अपने अनुबंध को एक ईश्वरीय प्राकृतिक कानून पर आधारित करते हैं जो मानव स्वार्थ से पहले का है, जबकि लोके अपना अनुबंध पूरी तरह से भौतिक आत्म-संरक्षण के लिए पूरी तरह से यंत्रीकृत, अनैतिक अभियान से प्राप्त करते हैं।
- (b) हॉब्स प्रकृति की स्थिति को पूर्ण लाइसेंस की एक पूर्व-नैतिक स्थिति के रूप में देखते हैं जहां अधिकार शक्ति के साथ सह-व्यापक है, संप्रभु की इच्छा को न्याय का एकमात्र स्रोत बनाता है; लोके प्रकृति की स्थिति को एक तर्कसंगत प्राकृतिक कानून द्वारा पहले से ही शासित मानते हैं जो किसी भी राज्य के निर्माण से पहले जीवन, स्वतंत्रता और संपत्ति के नैतिक दावों की रक्षा करता है।
- (c) हॉब्स सामाजिक अनुबंध को एक नाजुक, आसानी से भंग होने वाले व्यापार समझौते के रूप में मानते हैं, जबकि लोके अनुबंध को एक अचूक, अधिनायकवादी सामूहिक के लिए सभी व्यक्तिगत अधिकारों के अपरिवर्तनीय आत्मसमर्पण के रूप में मानते हैं।

(d) हॉब्स का तर्क है कि सामाजिक अनुबंध तभी मान्य है जब इसमें शक्तियों का पृथक्करण शामिल हो, जबकि लोके का मानना है कि सभी शक्तियां एक ही सम्राट में केंद्रित होनी चाहिए।

Ans.(b)

Q18. चिकित्सा नीतिशास्त्र का कौन सा सिद्धांत मुख्य रूप से यह सुनिश्चित करने से संबंधित है कि स्वास्थ्य देखभाल पेशेवर मरीजों को नुकसान न पहुँचाएं

- (a) परोपकार (Beneficence)
- (b) अहानिकरता (Non-maleficence)
- (c) न्याय (Justice)
- (d) मानव-केंद्रितवाद (Anthropocentrism)

Ans.(b)

Q19. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए

| सूची-I | सूची-II |
|---|----------------|
| A. एक वस्तु में सार्वभौमिक और विशेष गुण दोनों होते हैं | I. ऋजुसूत्र-नय |
| B. सार्वभौमिक गुणों पर जोर दिया गया और विशेष गुणों को नजरअंदाज किया गया | II. व्यवहार-नय |
| C. अनुभवजन्य ज्ञान पर आधारित पारंपरिक दृष्टिकोण | III. संग्रह-नय |
| D. जो वास्तविक है, वह क्षणिक है | IV. नैगम-नय |

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

- (a) A-III, B-I, C-II, D-IV
- (b) A-II, B-I, C-IV, D-III
- (c) A-I, B-III, C-II, D-IV
- (d) A-IV, B-III, C-II, D-I

Ans.(d)

Q20. निम्नलिखित में से कौन सा कथन उत्पीड़न के प्राथमिक स्रोत और केंद्र के संबंध में कट्टरपंथी नारीवाद और पारिस्थितिक नारीवाद (इकोफेमिनिज्म) के बीच मुख्य वैचारिक अंतर को सटीक रूप से पकड़ता है?

- (a) कट्टरपंथी नारीवाद सभी उत्पीड़नों की जड़ उत्पादन के पूंजीवादी तरीके में मानता है, जबकि पारिस्थितिक नारीवाद विशेष रूप से शहरी महिलाओं के कानूनी-संवैधानिक मतदान अधिकारों पर केंद्रित है।
- (b) कट्टरपंथी नारीवाद पितृसत्ता को सत्ता की एक स्वतंत्र, मूलभूत प्रणाली के रूप में पहचानता है जो महिलाओं को उनके शरीर और प्रजनन के राजनीतिक-भौतिक नियंत्रण के माध्यम से सीधे उत्पीड़ित करती है, जबकि पारिस्थितिक नारीवाद महिलाओं के पितृसत्तात्मक वर्चस्व और गैर-मानव प्राकृतिक दुनिया के विनाशकारी, पूंजीवादी शोषण के बीच एक वैचारिक और संरचनात्मक संबंध स्थापित करता है।
- (c) कट्टरपंथी नारीवाद का दावा है कि लिंगों के बीच जैविक अंतर को कानूनी रूप से बढ़ाया जाना चाहिए, जबकि पारिस्थितिक नारीवाद प्रकृति के अस्तित्व को पूरी तरह से खारिज करता है।
- (d) महिलाओं को मुक्त करने के अंतिम उपकरण के रूप में औद्योगिक टेक्नोलॉजी के अपने अंध समर्थन में दोनों आंदोलन समान हैं।

Ans.(b)

Q21. सोरन कीर्केगार्ड के अस्तित्वगत विकल्प और व्यक्तिपरकता का आधारभूत निर्माण ज्यां-पॉल सार्त्र के बीसवीं सदी के नास्तिक अस्तित्ववाद से संरचनात्मक रूप से कैसे अलग है?

(a) कीर्केगार्ड का दावा है कि अस्तित्व भौतिक वस्तुओं के लिए ही सार से पहले है, जबकि सार्त्र का दावा है कि यह विशेष रूप से ईश्वर पर लागू होता है।

(b) कीर्केगार्ड तर्क देता है कि अस्तित्व की कट्टर चिंता तब हल हो जाती है जब व्यक्ति अपनी व्यक्तिपरकता को ईश्वर के साथ एक पारलौकिक संबंध में लंगर डालने के लिए एक विरोधाभासी, गैर-तर्कसंगत "विश्वास की छलांग" करता है, जबकि सार्त्र जोर देकर कहता है कि क्योंकि ईश्वर का अस्तित्व नहीं है, मनुष्य पूरी तरह से "स्वतंत्र होने के लिए निर्दिष्ट" है, अपने स्वयं के मूल्यों का आविष्कार करने के लिए पूर्ण, मध्यस्थता रहित जिम्मेदारी वहन करता है।

(c) कीर्केगार्ड का मानना है कि सत्य पूरी तरह से वस्तुनिष्ठ और वैज्ञानिक है, जबकि सार्त्र सत्य को जैविक नियतिवाद के एक बदलते उत्पाद के रूप में देखता है।

(d) कीर्केगार्ड जीवन के "नैतिक चरण" को मानव विकास के अंतिम, अपरिवर्तनीय शिखर के रूप में देखता है, जबकि सार्त्र कलात्मक व्यक्तिवाद के पक्ष में नैतिकता को पूरी तरह खारिज करता है।

Ans.(b)

Q22. लैंग्वेज, ट्यूथ एंड लॉजिक में, ए.जे. एयर व्यवस्थित रूप से तत्वमीमांसा के उन्मूलन का विवरण देते हैं। सत्यापन के उनके मानदंड के अनुसार, पारंपरिक तत्वमीमांसीय दावों (जैसे "निरपेक्ष विकास करने में असमर्थ है") को शाब्दिक रूप से अर्थहीन छद्म-तर्कवाक्यों के रूप में क्यों वर्गीकृत किया गया है?

(a) क्योंकि वे उन भौतिक संस्थाओं का वर्णन करते हैं जो वर्तमान वैज्ञानिक उपकरणों द्वारा देखे जाने के लिए बहुत छोटे हैं।

(b) क्योंकि वे न तो विश्लेषणात्मक रूप से सत्य या असत्य (पुनरुक्ति) हैं और न ही अनुभवजन्य रूप से सत्यापन योग्य हैं, जो संवेदी अनुभव द्वारा झूठे या पुष्ट किए जा सकने वाले किसी भी चीज़ को व्यक्त करने में विफल रहते हैं।

(c) क्योंकि वे वैज्ञानिक समुदाय द्वारा स्थापित नैतिक और राजनीतिक संहिताओं का उल्लंघन करते हैं।

(d) क्योंकि वे निगमनात्मक न्यायवाक्यों पर निर्भर करते हैं जिनमें स्पष्ट औपचारिक भ्रान्तियां होती हैं।

Ans.(b)

Q23. द कॉन्सेप्ट ऑफ माइंड में, गिल्बर्ट राइल कार्टेशियन द्वैतवाद में निहित श्रेणी की गलती को कैसे स्पष्ट करते हैं?

(a) मन की तुलना एक मशीन से करके

(b) मानसिक स्थिति की तुलना एक भूत से करके

(c) मन की तुलना एक विश्वविद्यालय से करके

(d) मानसिक स्थिति की तुलना एक पेंटिंग से करके

Ans.(c)

Q24. तार्किक प्रत्यक्षवादियों की मुख्य चिंताएँ निम्नलिखित में से कौन सी हैं?

(A) विज्ञान की एकता

(B) प्रकृतिवाद का खंडन

(C) तर्क का खंडन

(D) तत्वमीमांसा का उन्मूलन

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें :

- (a) केवल (B) और (C)
- (b) केवल (A) और (D)
- (c) केवल (A), (B), (C), (D)
- (d) केवल (A), (B) और (D)

Ans.(b)

Q25. निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं?

- A. कांट में सर्वोच्च अच्छाई सद्भावना है।
- B. हेनरी सिजविक का उपयोगितावाद का दृष्टिकोण तर्कसंगत उपयोगितावाद है।
- C. जे.एस. मिल सुखों में मात्रात्मक अंतर को स्वीकार नहीं करते हैं।
- D. सुकरात में गुणों की संख्या 'एक' है।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

- (a) केवल A, B, C
- (b) केवल A, B, C, D
- (c) केवल B, D
- (d) केवल A, C

Ans.(c)

Q26. नील्से के नैतिक विचारों के संदर्भ में निम्नलिखित में से किसका दावा किया जा सकता है

- A. सुपरमैन का विचार मास्टर नैतिकता के आदर्शों को बहाल करने का एक प्रयास है।
- B. मास्टर नैतिकता मनुष्य को सहानुभूतिपूर्ण होने के लिए कहती है।
- C. मास्टर के मूल्य शक्ति के लिए इच्छा की अभिव्यक्तियाँ हैं।
- D. मास्टर-नैतिकता अपने स्वयं के मूल्य बनाती है।
- E. गुलाम एक दिन मास्टर बन सकता है।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

- (a) केवल B, C और E
- (b) केवल C, D और E
- (c) केवल B, D और E
- (d) केवल A, C और D

Ans.(d)

Q27. सत्य जागरूकता (प्रमा) की नव्य-न्याय परिभाषा के संदर्भ में, गंगेश उपाध्याय द्वारा अपनी तत्त्वचिंतामणि में तैयार की गई सटीक तकनीकी परिभाषा क्या है?

- (a) यथार्थानुभवः प्रमा (अनुभव जो अपनी वस्तु के अनुरूप है)।
(b) तद्वति तत्प्रकारकोऽनुभवः प्रमा (एक अनुभव जो किसी वस्तु को एक ऐसा चरित्र प्रदान करता है जो उस सटीक चरित्र को धारण करता है)।
(c) अनधिगत-अबाधित-अर्थविषयज्ञानम् प्रमा (वह ज्ञान जिसकी वस्तु न तो पहले से ज्ञात है और न ही बाद में खंडित होती है)।
(d) स्मृति-व्यावृत्तम् ज्ञानम् प्रमा (संज्ञान जो स्मृति से संरचनात्मक रूप से भिन्न है)।

Ans.(b)

Q28. I. टेलर का तर्क है कि व्यक्तिगत पहचान और नैतिक एजेंसी मौलिक रूप से संवादात्मक हैं, जिसका अर्थ है कि वे केवल एक साझा भाषाई समुदाय या "कथन के जाल" के संबंध में ही बन और कायम रह सकते हैं।

II. टेलर के अनुसार, मनुष्य "स्वयं-व्याख्या करने वाले जानवर" हैं जिनकी आत्म-समझ आंशिक रूप से इस बात का निर्माण करती है कि वे क्या हैं, जिसका अर्थ है कि हमारी भावनाएं और नैतिक ढांचे अभिव्यक्ति और परिवर्तन के लिए खुले हैं।

III. टेलर प्रक्रियात्मक उदारवादी दृष्टिकोण का समर्थन करते हैं कि राज्य को "अच्छे जीवन" की परिभाषा के संबंध में पूरी तरह से तटस्थ रहना चाहिए, किसी भी सांप्रदायिक या सांस्कृतिक संरक्षण पर व्यक्तिगत नकारात्मक अधिकारों को प्राथमिकता देनी चाहिए।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल I और II
(b) केवल II और III
(c) केवल I और III
(d) I, II, और III

Ans.(a)

Q29. कार्ल पॉपर के आलोचनात्मक तर्कवाद और उनके मिथ्याकरणीयता की कसौटी के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन सा कथन उनके दार्शनिक रुख के साथ संरेखित नहीं है?

- (a) एक सिद्धांत केवल तभी वैज्ञानिक होता है जब वह सभी संभावित मूल कथनों के वर्ग को स्पष्ट रूप से दो गैर-रिक्त उप-वर्गों में विभाजित करता है: वे जिनके साथ यह असंगत है (मिथ्याकरणकर्ता) और वे जिनके साथ यह सुसंगत है।
(b) मार्क्सवाद और फ्रायडियन मनोविक्षेपण वैज्ञानिक सिद्धांतों के रूप में विफल होते हैं क्योंकि उनमें व्याख्यात्मक शक्ति की कमी नहीं है, बल्कि इसलिए कि उन्हें किसी भी संभावित विरोधी साक्ष्य को दूर करने के लिए काफी ढीले ढंग से तैयार किया गया है।
(c) किसी सिद्धांत की पुष्टि यह दर्शाती है कि सिद्धांत के सत्य होने की उच्च वस्तुनिष्ठ संभावना साबित हो गई है, जिससे प्रमाण का भार इसके विरोधियों पर आ जाता है।
(d) साहसिक अनुमान जिनमें उच्च स्तर की मिथ्याकरणीय अनुभवजन्य सामग्री होती है, वे सतर्क, अत्यधिक संभावित परिकल्पनाओं की तुलना में वैज्ञानिक रूप से बेहतर होते हैं।

Ans.(c)

Q30. सूची-I (विचारक/स्कूल) को सूची-II (मूल ज्ञानमीमांसीय/आध्यात्मिक सिद्धांत) के साथ सुमेलित करें और सही कूट का चयन करें:

Test

Prime

By Adda247

Previous Year Papers PDF

PRACTICE MORE, SCORE HIGHER!



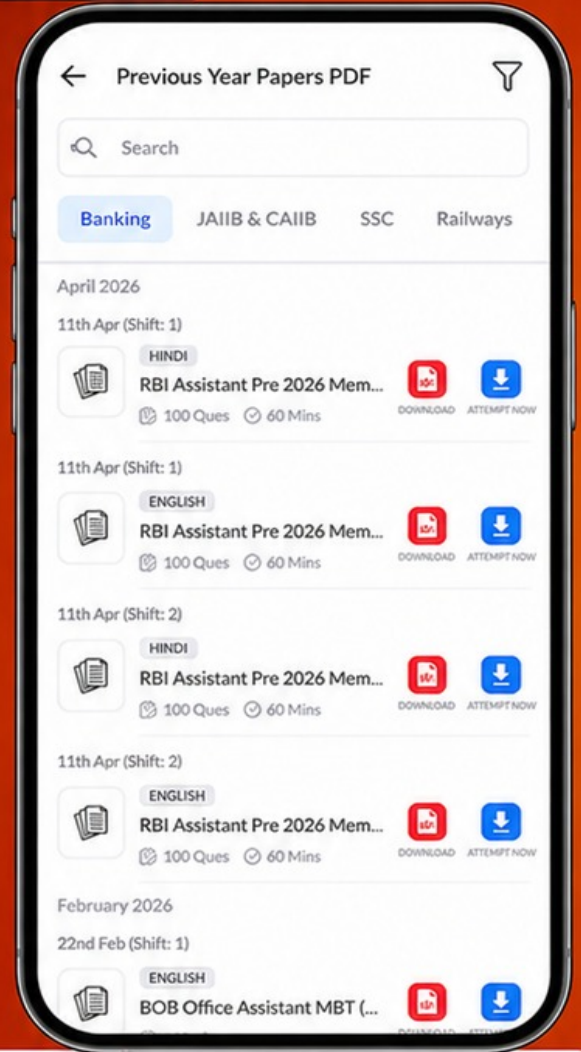
Free
25,000+
PDF's

High-Quality | Exam-Wise | Updated Regularly

ATTEMPT AS
MOCK



Turn PDFs into real exam experience.
Analyze. Improve. Succeed.



Topic-wise & Exam-wise PDFs



Download & Study Offline



Attempt as Mock & Track Score



Smart Analysis & Performance

AVAILABLE IN



Banking



SSC



Railway



Teaching



UGC



Agriculture



Nursing



Bihar



UP



Punjab



WB



Odisha



TN



AP & Telangana



Haryana



DOWNLOAD THE APP



| सूची-I (विचारक/स्कूल) | सूची-II (मूल सिद्धांत) |
|-----------------------|---|
| A. योगाचार बौद्ध धर्म | (1) दोहरे-पहलू वाला अद्वैतवाद / तटस्थ पदार्थ |
| B. कार्ल पॉपर | (2) विज्ञानवाद / बाहरी वस्तुओं का वस्तुनिष्ठ भ्रम |
| C. बारूक स्पिनोज़ा | (3) संवादात्मक स्व और हर्मैन्यूसिक यथार्थवाद |
| D. चार्ल्स टेलर | (4) पतनवाद और तीन-दुनिया तत्वमीमांसा |

कूट:

- (a) A-2, B-4, C-1, D-3
 (b) A-2, B-1, C-4, D-3
 (c) A-3, B-4, C-1, D-2
 (d) A-4, B-2, C-3, D-1

Ans.(a)

Q31. योगाचार बौद्ध धर्म में आलयविज्ञान और हेगेल के दर्शन में गीस्ट (आत्मा) की अवधारणाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

- I. आलयविज्ञान और गीस्ट दोनों निरपेक्ष, अपरिवर्तनीय पारलौकिक पदार्थों के रूप में कार्य करते हैं जो पूरी तरह से अनुभवजन्य, ऐतिहासिक या अभूतपूर्व अभिव्यक्तियों से स्वतंत्र मौजूद हैं।
- II. जबकि आलयविज्ञान एक भंडार चेतना के रूप में कार्य करता है जो अवचेतन छापों (वासना) को जमा करता है जो विषय-वस्तु द्वैतवाद के भ्रम को कायम रखता है, हेगेल का गीस्ट द्वैतात्मक संश्लेषण के माध्यम से आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करने के लिए वस्तुनिष्ठ ऐतिहासिक दुनिया में खुद को बाहरी करता है।
- III. परम वास्तविकता (परमार्थ) में, योगाचार आलयविज्ञान के विघटन या परिवर्तन (आश्रयपरावृत्ति) चाहता है, जबकि हेगेलियन घटनाविज्ञान निरपेक्ष ज्ञान के रूप में गीस्ट के पूर्ण बोध और संरक्षण (औफहेबुंग) में परिणत होता है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल I और II
 (b) केवल II और III
 (c) केवल I और III
 (d) I, II, और III

Ans.(b)

Q32. गोटलोब फ्रेगे के मौलिक निबंध ऑन सेंस एंड रेफरेंस (उबर सिन अंड बेड्यूटुंग) में, संज्ञानात्मक मूल्य के बारे में एक पहली को हल करने के लिए पहचान कथन "भोर का तारा ही संध्या का तारा है" का विश्लेषण किया गया है। फ्रेगे के ढांचे के अनुसार, निम्नलिखित में से किसे छोड़कर सभी दावे सत्य हैं:

- (a) "भोर का तारा" और "संध्या का तारा" अलग-अलग अर्थ (सिन्ने) व्यक्त करते हैं लेकिन एक ही संदर्भ (बेड्यूटुंग) को नामित करते हैं, जो कि शुक्र ग्रह है।
- (b) कथन "भोर का तारा ही भोर का तारा है" विश्लेषणात्मक और अनुभव-पूर्व है, जबकि "भोर का तारा ही संध्या का तारा है" में हमारे अनुभवजन्य ज्ञान के लिए मूल्यवान, विस्तार शामिल हैं।

(c) उचित नाम का अर्थ उस वस्तु की प्रस्तुति का तरीका (आर्ट डेस गेगेवेन्सेस) है जिसे वह संदर्भित करता है, जो वस्तुनिष्ठ और विभिन्न वक्ताओं के बीच साझा करने योग्य रहता है।

(d) यदि हम विश्वास के संदर्भ में "भोर का तारा" अभिव्यक्ति को "संध्या का तारा" से प्रतिस्थापित करते हैं (जैसे, "जॉन का मानना है कि भोर का तारा एक ग्रह है"), तो पूरे प्रस्ताव के सत्य मूल्य के अपरिवर्तित रहने की गारंटी है।

Ans.(d)

